E ISSN - 3048-8095

Akshardhara Research Journal

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Research Journal

March April 2025 VOL -01 ISSUE- V

Chief Editor : Dr. Priyanka Mahajan

Akshara Publication

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / March-April 2025 / VOL -01 ISSUE-V

Akshardhara Research Journal

March-April 2025

VOL -01 ISSUE-V

Akshara Publication
Plot. 42 Akshara Publication Gokuldham Residency
Prerna Nagar Wanjola Road Bhusawal Dist.Jalgaon [M. S.] India 425201

Akshardhara Research Journal

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / March-April 2025 / VOL -01 ISSUE-V

-: Chief Editor:-

Dr Priyanka J. Mahajan

Co-1110/6 Mamaji Talkies area Juna Satara Bhusawal.
Dist. Jalgaom (M.S) India Pincode 425201
Website: https://admrj.com
E-mail : admrj0404@gmail.com

-: Executive Editor & Publisher :-

Dr. Girish S. Koli

42 Akshara Publication Gokuldham Preranangar Wanjola Road Near Star Lone Bhusawal Dist. Jalgaon
[M. S.] India 425201
Mobile No: 9421682612

Member Of Editorial Board

DR. E.G. WAJIRA GUNASENA
Designation : Senior Lecturer (I) In Hindi
Address : Department of Languages, Cultural Studies and Performing Arts University of Sri Jayawardenepura, Nugegoda, 10250, Sri Lanka
Mobile : 0094 112758315
Email Id : wajiragunasena@sjp.ac.lk

DR. VIVEK MANI TRIPATHI
Designation : Assistant Professor
Address : Faculty of Afro – Asian Languages and Cultures, Guangdong University of Foreign Studies, Guangzhou, Guangdong, China.
Mobile : 86-18666279640
Email Id : 2294414833@qq.com

Dr. Girish Kumar Painoli
Designation : Professor
Address : School of Commerce and Management, Aurora Deemed to be University, Hyderabad India Pin Code:500098
Mobile : 07674938785
Email Id : girishkumar@aurora.edu.in

Dr.VIVEK ARUN JOSHI
Designation: Assistan Professor
Address: TES's Institute of Management and Career Development, Bhusawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India Pin Code: 425201
Mobile: 91 9881716287
Email Id : admin@ssgbhindimv.com

ADRJ Disclaimer :

For the purity and authenticity of any statement or view expressed in any article. The concerned writers (of that article) will be held responsible. At any cost member of ADRJ editorial Board will not be responsible for anyconsequences arising from the exercise of Information contained in it.

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / March-April 2025 / VOL -01 ISSUE-V

02

गजानन माधव मुक्तिबोध : काव्यसाधना एवं काव्य चिंतन

डॉ. काकासो बापूसो भोसले
रयत शिक्षण संस्था का,डॉ पतंगराच कदम महा.रामानंदनगर (बुर्ली) तह. पलूस. जि. सांगली

अपने जीवन कालमें सतत जुझते रहे योध्दा है। मिडल स्कुल अध्यापकी से आजी विका आरंभ कर थोड़े थोड़े समय अन्यान्य स्थानों मे रहते हुए १९५८ मे राजनादगॉव के दिग्विजय महाविदयालय में वे अध्यापक के रुप मे नियुक्त हुए। पारिवारीक जीवन में उनके प्रेम विवाह के कारण शेष परिवार उनसे दूर ही रहा।

तार सप्तक के एक कवि समीक्षा, निबंध इतिहास, कहानी और काव्य इन सभी क्षेत्रों में उन्होंने अपनी प्रतिभा, चिंतनशीलता का परिचय दिया है। उनके काव्य संग्रह मरणोपरांत प्रकाशित हुए हैं। नई कविता के सर्वाधिक महत्व पूर्ण कवियों में उनकी गणना की जाती है।

उनकी प्रारंभिक कविताएँ छायावादी परंपरा में आती है। १९३५-४० की कविता में वैयक्तिकता, प्रकृति प्रेम, सौंदर्य, कल्पना प्रियता, विस्मय वेदना का भाव आदि तत्व प्राप्त होते हैं। मालवा का प्राकृतिक सौंदर्य नयना - मिराम दृश्य, क्षेत्र के कलकल निनाद से संबध्द चित्रों के साथ आत्मसंघर्ष में विविधता, विरोध उनकी कविता में अभिव्यत है। छायावादी काव्य परंपरा के एक सशक्त हस्ताक्षर "निराला" की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए मुक्तिबोध ने जन जीवन का पक्ष लिया। जनजीवन में व्याप्त यंत्रणा, त्रास भूख दरिद्रता अवसाद, निराशा के भाव भी उनकी कविता में प्रभावी रीति से अभिव्यक्त हुए है।

मुक्तिबोध के अनुसार काव्य रचना केवल वैयक्तिक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया नहीं है। वह एक सांस्कृतिक प्रक्रिया है फिर भी वह एक आत्मिक प्रयास है। उसमें जो सांस्कृतिक मूल्य परिलक्षित होते हैं वे व्यक्तिमन की अपनी देन नहीं है तो समाज या वर्ग की देन है।

काव्य प्रेरणा और प्रयोजन या लक्ष्य के संबंध में मुक्तिबोध का विचार स्पष्ट है। काव्य के प्रेरणा स्त्रोत के रुप में वे जीवन को महत्व देते हैं। जीवन वह जो घर और बाहर रोज जिया जा रहा है, भोगा जा रहा है। कवि अपनी अभिव्यक्ति के चरम रूप को जनता में ही देखते हैं। कवि उसीसे स्फूर्ति प्रेरणा, अभय और धैर्य आदि को प्राप्त करते हैं। अतः उसी के चरणों में अपने को समर्पित करने को प्रस्तुत है।

मुक्तिबोध ने काव्य के प्रयोजन के रुपमें (१) आर्थिक पीडन नाश और समाज वाद की स्थापना को प्रतिपादित किया है। कविता में अन्याय का विरोध तथा वर्ग संघर्ष के व्दारा आधुनिक भावबोध को वे प्रस्तुत करते हैं। जीवन और जगत के प्रति साहित्यकार के दायित्व के विषय में मुक्तिबोध ने कहा है – " कि जो साहित्यकार पीडित मध्य वर्ग श्रेणी से आते है उन्हें सामाजिक प्रगति और मानव मुक्ति के लिए प्रयत्न करने चाहिए जीवन का समन्वित भाव आकुल जीवन मूल्यों को उनकी वेदना मयी स्थिति की कल्पना करते हुऐ काव्य में प्रस्तुत करना कविका श्रेय मुक्तिबोध ने प्रतिपादित किया है।

काव्य जीवन की पुनर्रचना है। काव्य रचना एक त्रिभूज सिध्दांत के आधार पर विकसित होती है। मानव की प्रबुध्द चेतना. बाहय समस्याओं के प्रति जागरुकता कवि व्यक्तित्व वह त्रिभूज है। काव्य सृजना में इनमें से किसी एक की भी अवहेलना नहीं की जा सकती। मुक्तिबोध की यह मान्यता है कि भाववादी कला. मानव के यथार्थ जीवन से कटकर अलग हो जाती है। कवि व्यक्तित्व के निर्माण में बाहय स्थितियों का प्राधान्य रहता है। कवि चेतना में विद्यमान अंतर्तत्व. संवेदनात्मक तत्व. समन्वित भाव जब एक रुपात्मक अभिव्यक्ति के लिए छटपटाते हैं. काव्य सृजना संभव होती है। काव्य कला में सौंदर्य बोध जीवनानुभूतिका एक रूप है। सौंदर्यबोध के विषय में मार्क्सवादी दृष्टि मुक्तिबोध पूर्णतः स्वीकार नहीं करते। उसकी मान्यता एक सीमातक ही है।

मुक्तिबोध विशुध्द कलावाद के विरोधक है। वे कलाकार को सामाजिक जीवन से तटस्थ और व्यक्तिवादी विचारो मै आबध्द देखना नहीं चाहते। क्षणवाद यह दृष्टिकोण मुक्तिबोध को स्वीकार्य नहीं है कि लेखक सौंदर्यानुभूति के विशेष क्षण से संबध्द रहे उसकी सत्ता की परिधिके बाहर न जाय। मुक्तिबोध को यह दृष्टिकोण बहुत छिछला प्रतीत होता है। यह सौंदर्यानुभूति केवल एक संवेदनात्मक प्रतिक्रिया समूह है।

मुक्तिबोध की काव्यवस्तु समाज. समाज का पीडित वर्ग है. जिसका कारण यह है कि आज का कवि साहित्यकार स्वयं गरीब या निम्न मध्य वर्ग की उपज है। प्रगतिवादी चिंतन जीवन के केवल राजनैतिक पक्ष को ही उठा पाया था। उसने संपूर्ण मनुष्य को

Akshardhara Research Journal

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / March-April 2025 / VOL -01 ISSUE-V

काव्य का विषय नहीं बनाया था। मुक्तिबोध विचार कृति पर लादने के पक्ष में नहीं थे। उनकी यह धारणा थी कि वह स्वयंस्फूर्त हो। काव्यवस्तु, विचार तथा सिध्दांत स्वतः स्फुर्ति के रुप में व्यक्त हुए है। मुक्तिबोध की कविता इस बात का प्रमाण प्रस्तुत करती है कि मार्क्सवाद का मूलाधार ग्रहण करने के बाद भी रचना महान और सार्वजनीन हो सकती है। सत्य के रौद्र रूपसे समन्वित होकर भी कविता शिव और सुंदर बन सकती है। उनकी कविता की परिभाषा है "संवेदनात्मक ज्ञान" अथवा " ज्ञानात्मक संवेदन" ज्ञान की इस प्रक्रिया में मुक्तिबोध मनुष्य के मानसिक जगत के गहरे स्तरों में भी उतरते हैं और यथार्थ में भी भटकते हैं। अपनी इस यात्र में कवि जटील और भयंकर यथार्थ नंगी सच्चाईयों और तनावों से होकर गुज़रता है।

मुक्तिबोध का मूल्यांकन करते हुए कवि और समीक्षकोंने अन्यान्य रुपों से उनका मूल्यांकन किया है - अज्ञेय ने उन्हें आत्मानवेषन का कवि कहा है तो अशोक वाजपेयी उनकी कविता को भयानक खबर की कविता कहते हैं। डॉ.रामविलास शर्मा उन्हें रहस्यवादी अस्तित्व वादी मानते हैं। फैंटेसी का सर्वाधिक प्रयोग मुक्तिबोध की कविता में हुआ है। उनका यह कथन है कि "यथार्थ" कविता में फैंटेसी के रुप में अभिव्यक्त होता है। कतिपय कविताओं की समीक्षा यहाँ उचित होगी।

"आत्मा के मित्र मेरे कवितामें मित्र को वे आत्मा के सुख उसके हास्य में आत्म परिचय का मूर्त होना वे स्वीकार करते हैं। मित्र के सुमुख पर हृदय के अंतर तम में छिया आलोक खुल जाता है आत्मीयताके के केंद्र पर गंध सा - मेरे हृदय का चित्र ही है। यह चित्र हृदय सागर में लहराता रहा है, लहरों से जुड़ता है।

कवि की छायावादी दृष्टि भी इस कविता में परिलक्षित है

"अप्सराएँ साँझ - प्रात,
मृद हवा की लहर पर से सिंधु पर रखं अरुण तलुए
उतर आतीं, कतिमय नव हास लेकर

यह मित्र जो आत्मवत है, सबसे अग्र में हैं। माता पिता सुहद सारे पीछे छूट जाते हैं। मित्र ज्वलंत तारक सां है। आत्मा का चित्र है।

" दूर तारा" कविता में भी एक रहस्यमयता है - आकाश शून्य हा नीलवर्णी विस्तार - एक तारा गतिमान है। धरती पर रहनेवाले मनुष्य उसे नापते हैं उदय-अस्त का इतिहास लिखते हैं। वह व्योम का अकेला राही तीव्र गति से गतिमान है। एक ओर शून्य में निस्संग विराट पक्ष का राही है तो दूसरी ओर प्रत्यक हृदय मैं वह छिपा है। कविता रहस्य भांव यहाँ व्यक्त है। आत्मतत्व, अहंतत्व सर्व व्याप्त है इसीसे कवि मनु के प्रत्येक पुत्रपर, हर मनुष्य पर विश्वास करते हैं। प्रत्येक मनुष्य महत्व का है।

मृत्यु और कवि" कविता में मृत्यु की भीषणता को बढ़ाने वाले भय प्रद वातावरण का चित्र कविने प्रस्तुत किया है -धनीरात बादल रिमझिम है दिशा निस्तब्ध वनांतर व्यापक अंधकार में सिकुड़ी सोई नर की वस्ती भयंकर है निस्तब्ध गगन रोती ती सरिता धार चली घहराती जीवन लीला को समाप्त कर मरण सेज पर है कोई नरा सारे परिवार में दुःख व्याप्त है जीवन की क्षणभंगूरता का विचार कवि के मनकों आंदोलित करता है। कवि को इस बात के लिए प्रबोधित करते है क्षणिक संवेदन से आतुर होकर जीवन चिंतन का अचानक निर्णय वह न करे। कवि के लिए उचित यही है कि वह अपनी काव्य महाराधना, साधना को भ्रष्ट न होने दे वीभत्स प्रसंग में भी उसे आकुलता से परे विव्हलता से दुर रहना हे! आवश्यकता यह है कि अपने अंत:प्रकाश में वह विनत रहे, प्रणत रहे - मृत्यु का अर्थ बोधन करे।

क्षण भृंगरता जीवन का अभिशांप नहीं, जीवन की गति है। जीवन का स्वर है। सृजनशील जीवन के स्वर में अमरगीत कवि गाएँ। तुम्हारे गीत घर घर में फैले। जीवन गती जीवन का स्वर नव आशा से ज्योतिल हो। "मुझे पुकारती हुई पुकार खो गयी कही" कविता रहस्यानुभुति को उजागर करती है। "मैं तुम लोगोंसे दूर हूँ" कविता सामाजिक विषमता की संकेत करती है।

कवि जो लोग संपन्न वर्ग के लोगोंने अपनी दूरी अनुभ्व करते है।दोनो वर्गों की प्रेरणाए इतनी भिन्न है "कि जो तुम्हारे लिए विष है "कवि के लिए अन्न है।

जीवन में उन चलते फिरते लोगों का साथ और साहचर्य का योगदान स्वीकार है जो उच्च वर्णियों द्वारा त्याज्य है और इसी लिए कवि शिकार है सतत आघातों का। जीवन की सीधी-सादी पटरी पर कवि दौडने का अनुभव कर चुके हैं, असफलता का धूनकचरा भी ओढ चुके है। एक और कवि अपनी सार्थकता से खिन्न है - बिंब से अप्रसन्न है। हम बेहतर के आकांक्षी सदैव है किंतु दुनिया की सफाई के लिए मेहतर चाहिए। कवि की यह अनुभूति है कि वे मेहतर नहीं हो पाते । मेहतर के काम में जो सफाई कुशलता है उनमें नहीं है। कवि यह भी जानते हैं कि कोई काम बुरा नहीं। आवश्यकता है आदमी के ईमानदार होने की फिर भी कवि अपने को

© Copyright 2024 ADRJ. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / March-April 2025 / VOL -01 ISSUE-V

काव्य का विषय नहीं बनाया था। मुक्तिबोध विचार कृति पर लादने के पक्ष में नहीं थे। उनकी यह धारणा थी कि वह स्वयंस्फूर्त हो। काव्यवस्तु, विचार तथा सिध्दांत स्वतः स्फुर्ति के रुप में व्यक्त हुए है। मुक्तिबोध की कविता इस बात का प्रमाण प्रस्तुत करती है कि मार्क्सवाद का मूलाधार ग्रहण करने के बाद भी रचना महान और सार्वजनीन हो सकती है। सत्य के रौद्र रूपसे समन्वित होकर भी कविता शिव और सुंदर बन सकती है। उनकी कविता की परिभाषा है "संवेदनात्मक ज्ञान" अथवा " ज्ञानात्मक संवेदन" ज्ञान की इस प्रक्रिया में मुक्तिबोध मनुष्य के मानसिक जगत के गहरे स्तरों में भी उतरते हैं और यथार्थ में भी भटकते हैं। अपनी इस यात्र में कवि जटील और भयंकर यथार्थ नंगी सच्चाईयों और तनावों से होकर गुज़रता है।

मुक्तिबोध का मूल्यांकन करते हुए कवि और समीक्षकोंने अन्यान्य रुपों से उनका मूल्यांकन किया है - अज्ञेय ने उन्हें आत्मानवेषन का कवि कहा है तो अशोक वाजपेयी उनकी कविता को भयानक खबर की कविता कहते हैं। डॉ.रामविलास शर्मा उन्हें रहस्यवादी अस्तित्व वादी मानते हैं। फैंटेसी का सर्वाधिक प्रयोग मुक्तिबोध की कविता में हुआ है। उनका यह कथन है कि "यथार्थ" कविता में फैंटेसी के रुप में अभिव्यक्त होता है। कतिपय कविताओं की समीक्षा यहाँ उचित होगी।

"आत्मा के मित्र मेरे कवितामें मित्र को वे आत्मा के सुख उसके हास्य में आत्म परिचय का मूर्त होना वे स्वीकार करते हैं। मित्र के सुमुख पर हृदय के अंतर तम में छिया आलोक खुल जाता है आत्मीयताके के केंद्र पर गंध सा - मेरे हृदय का चित्र ही है। यह चित्र हृदय सागर में लहराता रहा है, लहरों से जुड़ता है।

कवि की छायावादी दृष्टि भी इस कविता में परिलक्षित है
"अप्सराएँ साँझ - प्रात,
मृद हवा की लहर पर से सिंधु पर रखं अरुण तलुए
उतर आतीं, कतिमय नव हास लेकर

यह मित्र जो आत्मवत है, सबसे अग्र में हैं। माता पिता सुहद सारे पीछे छूट जाते हैं। मित्र ज्वलंत तारक सां है। आत्मा का चित्र है।

" दूर तारा" कविता में भी एक रहस्यमयता है - आकाश शून्य हा नीलवर्णी विस्तार - एक तारा गतिमान है। धरती पर रहनेवाले मनुष्य उसे नापते हैं उदय-अस्त का इतिहास लिखते हैं। वह व्योम का अकेला राही तीव्र गति से गतिमान है। एक ओर शून्य में निस्संग विराट पक्ष का राही है तो दूसरी ओर प्रत्यक हृदय मैं वह छिपा है। कविता रहस्य भांव यहाँ व्यक्त है। आत्मतत्व, अहंतत्व सर्व व्याप्त है इसीसे कवि मनु के प्रत्येक पुत्रपर, हर मनुष्य पर विश्वास करते हैं। प्रत्येक मनुष्य महत्व का है।

मृत्यु और कवि" कविता में मृत्यु की भीषणता को बढ़ाने वाले भय प्रद वातावरण का चित्र कविने प्रस्तुत किया है -धनीरात बादल रिमझिम है दिशा निस्तब्ध वनांतर व्यापक अंधकार में सिकुड़ी सोई नर की वस्ती भयंकर है निस्तब्ध गगन रोती ती सरिता धार चली घहराती जीवन लीला को समाप्त कर मरण सेज पर है कोई नर। सारे परिवार में दु:ख व्याप्त है जीवन की क्षणभंगूरता का विचार कवि के मनकों आंदोलित करता है। कवि को इस बात के लिए प्रबोधित करते है क्षणिक संवेदन से आतुर होकर जीवन चिंतन का अचानक निर्णय वह न करे। कवि के लिए उचित यही है कि वह अपनी काव्य महाराधना, साधना को भ्रष्ट न होने दे वीभत्स प्रसंग में भी उसे आकुलता से परे विव्हलता से दुर रहना हे! आवश्यकता यह है कि अपने अंत:प्रकाश में वह विनत रहे, प्रणत रहे - मृत्यु का अर्थ बोधन करे।

क्षण भृंगरता जीवन का अभिशांप नहीं, जीवन की गति है। जीवन का स्वर है। सृजनशील जीवन के स्वर में अमरगीत कवि गाएँ। तुम्हारे गीत घर घर में फैले। जीवन गती जीवन का स्वर नव आशा से ज्योतिल हो। "मुझे पुकारती हुई पुकार खो गयी कही" कविता रहस्यानुभुति को उजागर करती है। "मैं तुम लोगोंसे दूर हूँ" कविता सामाजिक विषमता की संकेत करती है।

कवि जो लोग संपन्न वर्ग के लोगोंने अपनी दूरी अनुभ्व करते है।दोनो वर्गों की प्रेरणाए, इतनी भिन्न है "कि जो तुम्हारे लिए विष है "कवि के लिए अन्न है।

जीवन में उन चलते फिरते लोगों का साथ और साहचर्य का योगदान स्वीकार है जो उच्च वर्णियों द्वारा त्याज्य है और इसी लिए कवि शिकार है सतत आघातों का। जीवन की सीधी-सादी पटरी पर कवि दौड़ने का अनुभव कर चुके हैं, असफलता का धूनकचरा भी ओढ चुके है। एक और कवि अपनी सार्थकता से खिन्न है - बिंब से अप्रसन्न है। हम बेहतर के आकांक्षी सदैव है किंतु दुनिया की सफाई के लिए मेहतर चाहिए। कवि की यह अनुभूति है कि वे मेहतर नहीं हो पाते। मेहतर के काम में जो सफाई कुशलता है उनमें नहीं है। कवि यह भी जानते हैं कि कोई काम बुरा नहीं। आवश्यकता है आदमी के ईमानदार होने की फिर भी कवि अपने को

©Copyright 2024 ADRJ. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / March-April 2025 / VOL -01 ISSUE-V

उस दिशामें ढो नहीं पाते। एक और बाहरी सजधज की दुनिया है विटॅमिन रेफ्रिजेरेटर, रडिओग्राम की दुनिया है तो दूसरी और भूख से पीडित दुनिया है। रहितों की क्रीड़ा है। जीवन में पीडा ही सत्य है, जो शून्यों से घिरी है, अनंत है। शेष वास्तव नहीं भ्रम ही है। दुःखों का क्रम सत्य है। कवि अपने आपको कनफटा हठा कहा है, जो जिददी नहीं है। अतः अपने आपको विरुप करते हुए, धनिको अमीरों की आज्ञा ढोनेवालों का वह प्रतिनिधि है।

प्रिय-प्रिया की निष्ठावन जिंदगी की चित्र " संघर्ष स्वीकार है" कविता का प्रति पा है। जिंदगी में जो भी है, तुमने प्रिया ने सहर्ष स्वीकारा है, जो कुछ भी प्रिया का है वह तुम्हें प्रिय ही रहा है। गरीबी गंभीर जीवनानुभव विचार वैभव, भीतर की सरिता भावप्रवणता अभिनय सब कुछ मालिक है। तुम्हारा संवेदन सदैव जाग्रत है। पता नहीं हमारे रिश्ते नाते क्या है? दिल में मीठे पानी का प्रवाह है। तुम्हारा चेहरा चाँद के समान मुस्कारता है, खिलता है।

कवि प्रिय को भूलना चाहता है अपने चेहरे पर अंत में दक्षिण धृवं की अंधकार पूर्ण अमावस्या पालने की, उसमें नहाने की उसकी अभिलाषा है। रमणीय उज्ज्वलता अब सहीं नहीं जाती, आत्मा कमजोर हो गई है, छटपटाने वाले सीने को भवितव्यता डराती है। आत्मीयता वहलानदाली, सहलानेवाली अबबरदश्तगी के बाहर है।

कवि दण्डित होने के आभिलाषि है। पाताली अंधेरे में लापता होने की उनकी इच्छा है। किंतु वहाँ भी प्रिय का सहारा है क्या जिंदगी का सब कुछ सहर्ष स्वीकारा गया है। कवि का जी कुछ है, वह उसे प्यारा है।

शक्ति के आमृत का घूटे कविता में जीवन के अमरत्व को, मनु पुत्र की जिजिविषा को कवि ने प्रस्तुत किया है एक बीज के साथ मानव की सहजनशीलता उसको- निराशा नहीं जिजिविषा उद्घाटित किया है अमृत घूंट पी पर वीज ने धरती की पर्त को तोड कर अपने जीवन का अस्तित्व प्रमाणित किया धरतीने अपना ज्वलंत वसंत उसमे निहारा लिया है - हृदय अग्नि के आसव को पाकर धरतीने जीवन सुहाग भरे ज्वलंत लाल फूल खिलाए है। बीज ने अपने अस्तित्व को अपने कृतित्व को नहीं पहचाना सारा श्रेय धरती को देकर अपने वसंती रुप को भी अस्वीकार किया है अपने आप को धरती की लावण्यमयी छाया मात्र माना है। मानव और मानवता का वही रिश्ता है जो धरती और वसंत का है। जीवन के प्रतिपाद के संबंध में मुक्तिबोध की आस्था सभी कविताओं में जो जीवन के प्रतिपाध के साथ जुड़ी है, अभिव्यक्त है, असीम शोषण से पीडित होते हुए भी मुक्तिवोध की जीवन दृष्टि कुंठित नहीं है। वे अपने गंतव्य पर अपना ध्यान केंद्रींत करते हुए चलते हैं अंधेरे के साथ टकराते उजाले की आस्था में और उत्साह के साथ। मानव के सुनहले स्वप्नों की पूर्ति मानव मानवता के मार्गपर चलकर ही संभव है।

काव्य शिल्प की दृष्टि से मुक्तिबोध जहाँ यथार्थवादी है, तो भाववादी रुमानी भी है। काव्य कला में प्रतीक विधान बिंव का भी प्रयोग कवि ने अपने प्रतिपाद्य को संप्रेषणीय बनाने के लिए किया है। प्रकृति के प्रतीक शक्ति के अमृत का घूँट वैज्ञानिक । यांत्रिक प्रतीक रिप्रेजरेटर, विटैमिनो, शेव्रोलेट, डॉज आदि में व्यक्त है। उनकी कविता में उनका अहम भी झलकता है।

मुक्तिबोध की कविता के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है वे ईश्वर के प्रति आस्थावान नहीं है। भारतीय दर्शन के निष्काम कर्मवादी सिध्दांत का भी विरोध उन्होंने किया है जिसका कारण यह है कि यह सिध्दांत शोषण का प्रतीक ही नहीं शोषको का प्रतिनिधि है। ईश्वर के स्थान पर वे मानव की प्रतिष्ठा मानते है। उनकी नजर में मानव से महत कोई शक्ति नहीं है। वे मार्क्सवाद से प्रभावित थे व्यक्तिवाद उनके लिए कवच के समान मानव शोषण मुक्ति मार्क्सवाद से ही उन्होंने सवीकार की है। नई कविता के एक समर्थ हस्ताक्षर जिनकी मान्यता कवियों के कव है- शमशेर बहादुर सिंह का यह वक्तव्य सटीक प्रतीत होता है " मुक्तिवोध ने छायावाद की सीमाएँ लॉघकर, प्रगतिवाद से मार्क्सो दर्शन ले, प्रयोगवादी के अधिकांश हथियार संभाल और उसकी स्वतंत्रता महसूस कर, स्वतंत्र कवि रुप से सब वादों और पार्टियों से ऊपर उठकर, निराला की सुधरी और खुली मानवतावादी परंपरा को बहुत आगे वढाया। "

संदर्भ ग्रंथ

1. अज्ञेय. (1943). *तारसप्तक.* भारतीय ज्ञानपीठ।
2. तिवारी, अचला रानी. *मुक्तिबोध की काव्य कला.* विद्याविहार प्रकाशन।
3. शर्मा, शशिवाल. (वर्ष अनुपलब्ध). *मुक्तिबोध की कविता में यथार्थ बोध.*
4. तिवारी, विश्वनाथ प्रसाद. (1986). *मुक्तिबोध.* वाणी प्रकाशन।

© Copyright 2024 ADRJ. All Rights Reserved